Amrit Kalash

Vol 1

दहक़ान की दावत

राधास्वामी भाईसाहब !
राधास्वामी भाईसाहब !
राधास्वामी ! सुना है आप अभी दयालबाग से लौटे हैं। कैसा रहा सब कुछ?

जी हाँ। मालिक की दया से सब कुछ बढ़िया ही रहा। सुबह,शाम मालिक के साथ सतसंग,खेतों में सेवा,पावन स्मृत्यालय में मत्था टेकना,स्वामीजी महाराज के समाध का दर्शन,इत्यादि। सच में,वहाँ के रौनक को देख दिल प्रसन्न हुआ।

यह एक राजा की कहानी है . . .

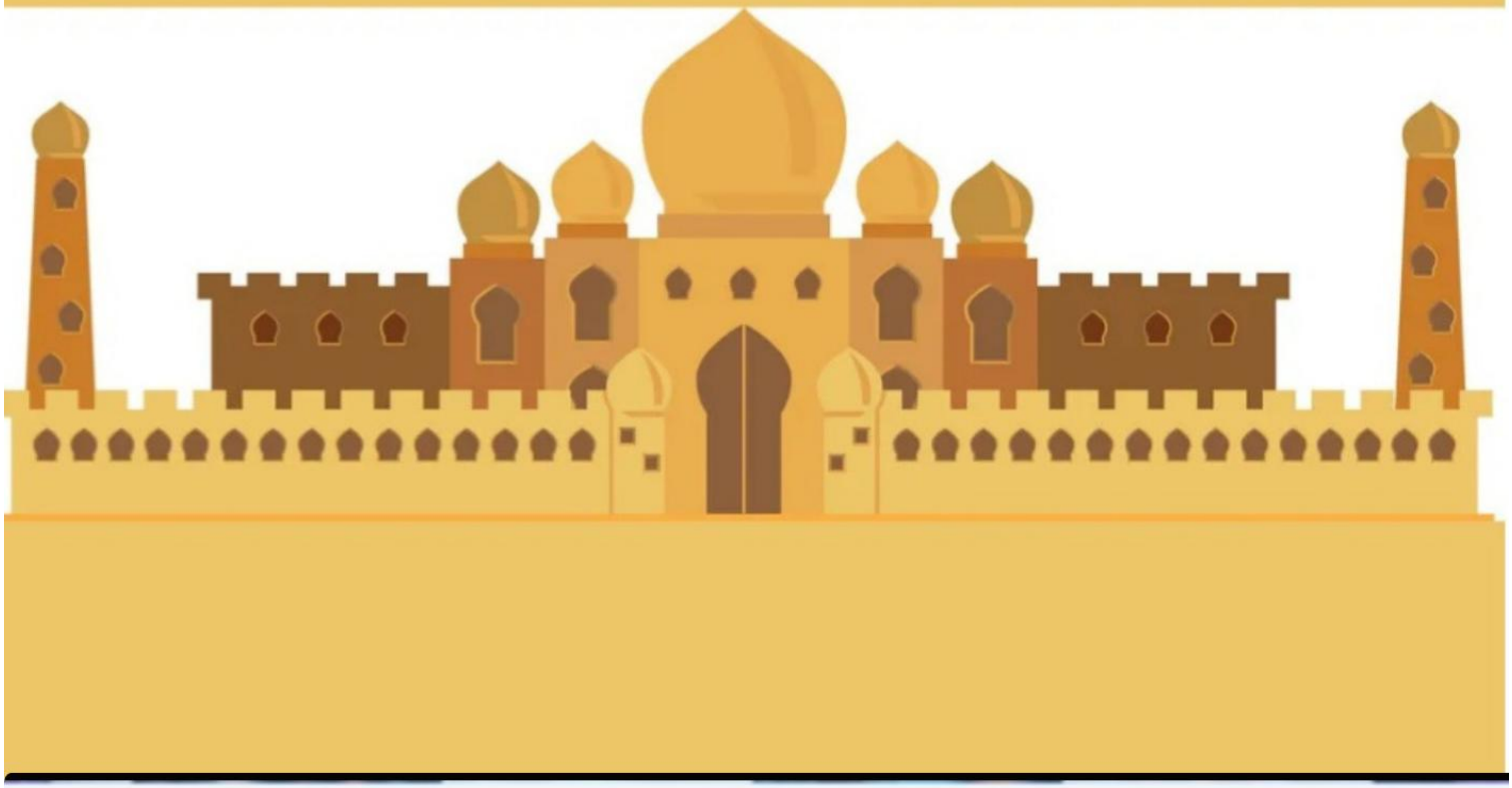

मंत्री जी! हमारे राज्य के हालचाल के बारे में मैं आपसे सुनना चाहूँगा ।
महाराज की जय हो!
जी महाराज!आपके शासन से सारी जनता अत्यंत ख़ुश दिखाई दे रही है। आजकल ज़मींदार भी सही समय पर हमें कर चुका रहे हैं। आपका यश हमारे पूरे साम्राज्य के कोने-कोने तक फ़ैल चुका है ,प्रभु।

प्रभु! अभी तो युद्ध की भी कोई आशंका नहीं दिखाई दे रही है।
आपने सभी शत्रुओं को पराजित करके, अपने साम्राज्य का विस्तार भी कर लिया है।अब हमारे राज्य में चारों ओर शांति है।
जय हो!!!
वाह सेनापति !
फिर हम कल शिकार करने जंगल जाना चाहेंगे।
सेनापति,आवश्यक प्रबंध तुरंत किया जाये।
जी महाराज !!!

जंगल की ओर राजा व सेनापति चल पड़े ...

कुछ दूर जाकर ...

महाराजा न जाने कहाँ चले गए ...

लगता है मैं रास्ता खो गया हूँ। हिरण को पकड़ने के प्रयास में शायद मैं सेना को ही पीछे छोड़ आया।

क़रीब ८ घंटे बाद ...

बहुत थक गया हूँ। न पीने को पानी है ,न ही खाने को कुछ है। क़ाश एक झरना होता।

६ घंटे बाद...
बहुत थक गया हूँ। पर कुछ दूरी पे एक घर दिखाई दे रहा है। छोटा सा गाँव हुआ होगा। जाके देखता हूँ।

सुनिये ! मैंने रास्ता खो दिया है। मुझे भूख और प्यास लगी है और आपकी सहायता की आवश्यकता है।

"अतिथि देवो भव"यानि कि घर आए अतिथि भगवान समान हैं। चलिए सज्जन! आपको घर के अंदर ले चलता हूँ। आप थके हुए लग रहे हैं।

किसान राजा को अपनी झोपड़ी में ले जाता है।

मैं एक गरीब किसान हूँ। हमारे पास आज खाने में सूखी रोटी और चटनी के सिवाय कुछ नहीं है। आशा है कि इसे आप स्वीकार करेंगे।

भोजन के बाद...
आज आपने मुझे खाना खिलाकर, ठंडा पानी पिलाकर मेरे प्राण बचाये हैं। मैं ज़िंदगी भर आपका आभारी रहूँगा।आपका बहुत बहुत धन्यवाद। अब मैं चलता हूँ। मुझे राजनगरी जाना होगा। क्या आप मुझे रास्ता बता सकते हैं??

किसान राजा को ध्यान से देखता है और घबरा जाता है ...

राजमहल के बगीचे पहुँचे राजा...

राजा अपने राजमहल आ गए जब दूर से सेनापति
उन्हें देखकर,आश्चर्यचकित हो उठा।

हे प्रभु!!!भगवान की कृपा से
आप सुरक्षित घर लौट आए।
कल से हम बहुत चिंतित थे।

कुछ समय बाद ...

जय हो महाराज! प्रभु,हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई आपको सुरक्षित देखकर। आप कहाँ थे?
मंत्री जी! हम जंगल में शिकार करते समय रास्ता खो गए थे। तब दूर एक गाँव मिला। वहाँ के एक किसान ने मुझे खाना व पानी देकर मेरी सहायता की।आज अगर मैं जीवित हूँ तो उसका पूरा श्रेय उन्हें मिलना चाहिए।

मंत्री जी! क्यों न हम किसान को एक दिन राजमहल में भोजन के लिए आमंत्रित किया जाए और उन्हें सम्मानित किया जाए।
जी महाराज!! मैं अभी उन्हें संदेश भेजता हूँ।

२ दिन बाद...

बावर्ची जी! भोजन तैयार तो है न? आज एक विशेष व्यक्ति के लिए महाराज जी ने शाही दावत का आयोजन किया है।
जी मंत्री जी! हमने स्वादिष्ट भोजन तैयार किया है। लगभग २५ तरह के भाजी,१० तरह के रोटी और अन्न,४० तरह के मिष्ठान्न ,कुछ नमकीन और अलग अलग फल भी प्रस्तुत करने जा रहे हैं। आइए आपको दिखाता हूँ।

बावर्ची मंत्री जी को भोजन-कक्ष की ओर ले चलता है...

मंत्री जी! सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि विभिन्न देशों के पकवान भी हमने आज बनाए हैं।
फिर तो बढ़िया है। ये दिखने में ही नहीं बल्कि खाने में भी स्वादिष्ट हुए होंगे।

प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य रहा जो आपकी सेवा करने का हमें अवसर मिला।आज का दिन सच में हमारे लिए अविस्मरणीय है।
आइए लखन जी! स्वागत है आपका हमारे राजमहल में।उस दिन अगर आपने हमारी सहायता नहीं की होती,तो हम आज जीवित न रहते। हम आपके आभारी हैं।आज हमें अवसर दें और हमारा आतिथ्य स्वीकार करें।
आइए! आपको भोजन-कक्ष की ओर ले चलते हैं।

भोजन कक्ष में...
महाराज ! मैंने कभी अपने जीवन में इतने सारे पकवान नहीं देखें हैं। मैं बड़ा भाग्यशाली निकला।

पता नहीं कहाँ से शुरू करना चाहिए। अगर एक पदार्थ खाऊँगा और अगर उसी से पेट भर जाये तो बचे हुए पकवानों को कम से कम चखने का अवसर भी नहीं मिलेगा।

१५ मिनट बाद ...

महाराज ! मैं इन सब पकवानों से परिचित नहीं हूँ। यह सोच में पड़ गया कि कहाँ से प्रारंभ करना चाहिए।मुझे डर इस बात का है कि कोई एक पदार्थ यदि खाता हूँ तो बचे हुए पकवानों को शायद कभी चख भी नहीं पाऊँगा। इसलिए कृपया आप इन पदार्थों में सबसे स्वादिष्ट क्या है बता दीजिये,हम वही खाऐंगे।फिर दूसरा,फिर तीसरा,इत्यादि।
क्या सोच रहे हैं आप?आप खा क्यों नहीं रहे?

तो ये थी कहानी जो परम गुरु हुज़ूर साहबजी महाराज के बचनों में उपस्थित है।
अच्छा ! तो क्या आप हमें ये भी समझा सकते हैं कि क्या सीख मिली?
बिल्कुल

अभी इस कहानी को हम सतसंग से जोड़कर देखते हैं।संत सतगुरु भाग्य से किसी सतसंगी को मिल गए और उसने उपदेश भी ले लिया। अगर किसी सतसंगी ने इसका पूरा लाभ नहीं उठाया तो उसकी हालत उस किसान जैसी है जो अपने सामने रखे हुए अनेक पकवान को खा ही नहीं पाया।
अगर सतसंग में रहते हुए भी हममें क्रोध,लोभ,मोह,अहंकार हो तो उपदेश लेना ही व्यर्थ है और हमारी स्थिति की तुलना उस किसान से की जा सकती है जिसने कड़वा या मिर्च खा लिया हो और जिसने अपना पेट पानी पीके भर लिया हो।

यदि देखा जाये तो किसान इस कहानी में बुद्धिमान निकला,सही कहा ना भाईसाहब?
जी,सही कहा।किसान बुद्धिमान रहा जिसने महाराजा से पूछा कि आप ही हमें सर्वश्रेष्ठ पदार्थ प्रदान करें। ऐसे में बेहतर होगा हज़ूर से संपर्क करें या सवाल करें।

अगर सतसंगी संत सतगुरु से सवाल भी करे कि हे महाराज!कौन सा पदार्थ सबसे उत्तम है तो उसका जवाब क्या होगा?
इसका जवाब संत सतगुरु ने स्वयं बतलाया है कि सतसंग में संत सतगुरु की मौजूदगी में सबसे उत्तम कार्रवाई यह है कि संत सतगुरु की दृष्टि से दृष्टि जोड़कर बैठें,चित्त की वृत्ति एकत्र करें और दृष्टि मिलाएँ जैसे सारबचन में कहा गया है। दूसरा सतगुरु द्वारा स्पर्श की हुई चीजों को इस्तेमाल में लाना और तीसरा ध्यान संत सतगुरु का करना और शब्द का सुनना।
परम गुरु साहबजी महाराज के बचन(बचन-९४)